ज़िंदादिली और उल्लास के हरकारे

रेलकर्मियों में अवसाद पर अनुसंधान करने वाले डॉ. असीम मजुमदार

पश्चिम रेलवे के प्रधान कार्यालय में यांत्रिक विभाग के चीफ ओएस श्री असीम मजुमदार ने यू.एस.ए.-कोलंबिया की कॉरलिंस यूनिवर्सिटी (Corllins University, Colombia, U.S.A.) से सायकॉलॉजी में पी.एच.डी. सफलता पूर्वक अर्जित की है। आपका रिसर्च प्रोजेक्ट था- ''भारतीय रेलवे में तृतीय श्रेणी कर्मचारियों में अवसाद के प्रभावित घटक'' (Factors affecting depression in class III employees in Indian Railways) आपको उत्कृष्टता के साथ विशेष योग्यता सहित पुरस्कृत भी किया गया है। इससे पूर्व आपने ''ग्लोबल ओपन यूनिवर्सिटी'' द्वारा सायकॉलॉजी (मनोविज्ञान) में एम.फिल. की उपाधि भी प्राप्त की है। यह उपाधि आपने प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की है। एम.फिल. तथा पी.एच.डी. को पूर्ण करने में आपका सहयोग एवं मार्गदर्शन मुम्बई यूनिवर्सिटी के डॉ. अवनीश डिसूज़ा एवं डॉ. राजा राय चौधरी द्वारा किया गया। आपने अपने कार्यस्थल पर पर्यवलोकण के अंतर्गत सभी श्रेणियों के कर्मचारियों का अध्ययन किया है। सामान्यतया आप लंच या दोपहर के समय में सम्बंधित प्रश्नों को लेकर 'हाँ', 'ना' और ''कुछ कह नहीं सकते'' इस तरह के उत्तरों पर भी कार्य करते हैं। रेलवे जैसे बड़े संगठन में सीमित समय में, एक व्यक्ति द्वारा सभी श्रेणियों के कर्मचारियों का सूक्ष्म तरीके से निरीक्षण अथवा अवलोकन बड़ा कठिन है। कार्यालयीन स्तर पर आपने देखा कि कई कर्मचारी अवसाद (depression) से ग्रस्त हैं। सुरक्षा की दृष्टि से भी यह निरीक्षण काफी लाभप्रद सिद्ध हो सकता है एवं सही तस्वीर सामने आ सकती है। दबाव में अथवा अवसाद के भीतर कार्य करना खतरनाक साबित हो सकता है। अनेक लोगों से /स्टाफ से मिलने के पश्चात कर्मचारियों ने काफी सहयोग दिया है एवं ऐसी इच्छा भी जताई है कि प्रशासन की ओर से अथवा ट्रेड यूनियन की ओर से समय-समय पर निरीक्षण/सर्वे करवायें ताकि कर्मचारियों की समस्याओं का मानसिक तौर पर हल खोजा जा सके। श्री असीम मुजमदार भी स्वयं चाहते हैं कि वे भारतीय रेल के कर्मचारियों/उनके परिवार वालों से मिलजुल कर, यदि उन्हें आवश्यकता हो तो उनका अवसाद दूर करने हेतु काउंसिलिंग कर सकें। 'ऑर्गेनाईजेशनल बिहेवियर' 'ऑर्गेनाईजेशन-इफिसियंसी' की अग्रिम शिक्षा, मनोवैज्ञानिक पहलू से वे कर रहे हैं। निश्चित ही उनका यह योगदान, शिक्षा और अनुभव रेल कर्मचारियों के लिए किसी वरदान से कम साबित नहीं होगा। श्री असीम मज़ूमदार की इस उच्च शिक्षा का उपयोग/मार्गदर्शन अधिक से अधिक रूप में होना चाहिए ताकि कई कर्मचारियों को इसका लाभ मिल सके। आज के इस तनाव भरे प्रतिस्पर्धा के युग में समय की कमी से शारीरिक-मानसिक-आर्थिक-व्यवहारिक कारणों से प्राय: आम मनुष्य तनाव में, हताशा में, निराशा में चला जाता है। अत्यधिक तनाव या अत्यधिक निराशा मनुष्य को अवसाद की गर्त्त में गिरा सकती है। ऐसे में मनुष्य जीवन के प्रति निराश होकर, किसी भी प्रकार के घातक कदम उठा सकता है। ऐसी घातक परिस्थितियों से बचा जा सकता है। यदि उनका सही मार्गदर्शन/काउंसिलिंग हो। यदि आप चाहें तो असीम मजुमदार से निम्न क्रमांक पर सम्पर्क कर सकते हैं। Rly- 22182, 09821112305, CUG : 9004441437, drasimmajumdar@gmail.com or majumdarasim@ymail.com श्री असीम मजुमदार के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

✍ **श्रीमती पूजा संजय पवार,**
कार्यालय अधीक्षक, परिवहन विभाग, चर्चगेट

पुस्तक समीक्षा

हृदय की टीस की सार्थक अभिव्यक्ति हैं ये कविताएँ

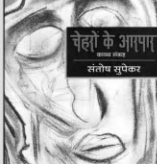

- पुस्तक का शीर्षक :- चेहरों के आरपार
- पुस्तक की विधा :- काव्य संग्रह
- लेखक :- संतोष सुपेकर
- पृष्ठ संख्या :- 123, मूल्य :- ₹180/-
- प्रकाशन :- सरल काव्यांजलि, उज्जैन

पश्चिम रेलवे, उज्जैन में लोको पायलट के पद पर कार्यरत अहिन्दी भाषी रचनाकार श्री संतोष सुपेकर के एकाधिक लघुकथा संग्रह प्रकाशित हैं और हिन्दी लघु कथाकार के रूप में स्थापित होने की प्रक्रिया में निरंतर अग्रसर भी हैं। मध्यप्रदेश लेखक संघ द्वारा वर्ष 2011 के प्रादेशिक शीर्ष पुरस्कार से भी सम्मानित हो चुके हैं। अब मेरे सम्मुख श्री सुपेकर का काव्य संग्रह 'चेहरों के आर पार' है, जिसे पढ़कर नि:संदेह यह कहा जा सकता है कि ये रचनाएँ सम्भावनाओं से आपूरित हैं तथा समाज की विषमताओं का हृदय स्पर्शी वर्णन करती हैं और विसंगतियों पर मारक टिप्पणियाँ करने में भी सफल हैं। प्रस्तुत संग्रह की रचनाएँ मानवीय संवेदनाओं की निर्भीक अभिव्यक्ति हैं। 'एक बार आ जाओ नेताजी' जैसी कविता में देश-प्रेम का जज्बा दृष्टव्य है तो 'हफ्ता' कविता में हिन्दी के साधारण शब्द-हफ्ता, सुपारी के बदलते हुए स्वरूप पर कवि की चिन्ता उजागर हुई है।

साहित्य मानवीय संवेदना और समाज की विसंगतियों तथा विशिष्टताओं की अभिव्यक्ति का श्रेष्ठ माध्यम है। परन्तु कविता में 'काव्यानन्द ब्रह्मानंद सहोदरा' की उक्ति तभी चरितार्थ होती है जब कविता में रस निष्पत्ति हो। इस दृष्टि से कविता में लय से विरक्त होकर एक रिक्तता का अहसास होता है। छन्द से मुक्त होना श्रेयस्कर हो सकता है, परन्तु लय से मुक्त होकर कविता कहीं अपनी पहचान खोती नजर आ रही है। भाई संतोष अधुनातन हिन्दी कविता के 'अ-कविता' आंदोलन से प्रभावित न होते हुए, कवि कर्म में प्रवृत्त हों यही अपेक्षा है। प्रस्तुत रचनाएँ आरम्भिक प्रयास हैं, पर इनमें हृदय की टीस को सार्थक अभिव्यक्ति देने में कवि सफल प्रतीत हो रहा है। 'गूंधना और गूंधना' में - नन्ही बेटी ने भी समय की नब्ज/पहचानते हुए/अपने बाल कटवाकर छोटे कर लिये हैं/ क्योंकि मां नहीं है अब/बाल गूंथने, चोटी गूंथने/से ज्यादा जरूरी हो गया है/आटा गूंधना/में कवि विवशताओं पर अपनी पैनी दृष्टि रखता है, तभी वह नन्ही लड़की के 'बाण्ड हेयर' को फैशन के वशीभूत होकर नहीं देखता है। शहर और शहरीकरण की तीव्रता के साथ हो रही वृद्धि से उपजी विसंगतियों पर कवि सजग है और लिखता है- 'कौन कहता है, जंगल अब नहीं रहे/जंगल अब भी बहुतायत में हैं और जंगलीपन तो/जंगलों से ज्यादा है/हाँ एक फर्क है इन जंगलों में बत्तियाँ जलती दिखती हैं/दस-बीस मंजिलों की उँचाईयों तक।' कवि की वेदना पिघलती हुई कहीं 'ओजोन गीत' लिखती है तो कहीं शहरी जीवन से ऊब कर 'फिर केवल अंगड़ाई' लेकर जाग उठता है और आंकड़ों के फैलाव पर - 'झूठ, जो कि आज कि/अभिव्यक्ति के साम्राज्य का भष्ट निरंकुश, किन्तु सर्वमान्य शासक है' कविता में बेबाक टिप्पणी करता है। 'मुझे भी नफरत है-' में-'नफरत मुझे है चाकू छुरी और बंदूक की गोलियों से/जिनका दुरुपयोग निर्दोष की जान ले लेता है पर नफरत का मेरा प्रतिशत/सबसे ज्यादा कुल्हाड़ी के प्रति है जो पेड़ काट डालती है' पंक्तियाँ पर्यावरण के प्रति जागरूकता को दर्शाती हैं। समाज में व्याप्त आपा धापी, भीड़, शोर गुल और भौतिकता का अंधानुकरण, स्वार्थ लोलुपता आदि विसंगतियाँ कवि संतोष के हृदय की टीस को उप्रेरित करती हैं। लघुकथा में किसी 'कथानक की डोर' से भी उन्मुक्त हो भावाभिव्यक्ति को प्रकट होने कि दिशा में प्रस्तुत काव्य संग्रह एक सार्थक पहल है। यह और बात है कि कविता का ककहरा जाने बिना भी कतिपय कविताएँ निस्रत हो जाती हैं और पाठकों को सहज ही भा जाती हैं। अस्तु ... संतोष सुपेकर निरंतर कवि-कर्म में अग्रसर होते रहें, मेरी समस्त शुभकामनाएँ।

✍ **डॉ. हरीश प्रधान, अध्यक्ष, म.प्र. लेखक संघ, उज्जैन**